International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 03(I), July - September, 2021, pp.185-188

सूरदास के काव्य में राधा का स्वरूप

डॉ. अर्चना श्रीवास्तव*

सार

सूरदास जी ने भागवत की परम्परा का निर्वाह करते हुए राधा का स्पष्ट नामोल्लेख करने में कुछ संकोच किया है। वे राधा के लिए स्वामिनी शब्द का प्रयोग करते है। श्री वल्लभाचार्य कृत माधुर्य भावना के एक स्त्रोत में पशुपजा शब्द मिलता है। इसी पशुपजा गोपकन्या को राधा का सूचक माना गया है। सूरदास ने अपने साहित्य में इसी गोपकन्या के विविध स्वरूपों की चर्चा की हे। वह प्रारम्भ से आखिर तक बाल किशोरी है, वह पूर्ण रूप से भारतीय नारी की मर्यादा का पालन करती है। उनका कृष्ण के प्रति प्रेम हृदय का प्रेम है, शरीरी नहीं। उसके प्रेम में यौवन की गंध नहीं, बाल्यावस्था की अल्हड़ता की सुवास है। राधा का प्रेम एकनिष्ठ है, वह कृष्ण के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देती है। सूरदास की राधा की प्रेम–साधना महान है, जो विरह की अग्नि में तपकर कुंदन बन गयी है। वह तीन लोक से न्यारी है। भारत के किसी भी कवि ने इस पूर्णता के साथ नहीं किया। बाल–प्रेम की चंचल लीलाओं की इस प्रकार की परिणति सचमुच आश्यर्चजनक है। संयोग की रसवर्षा के समय जिस तरल प्रेम की नदी बही, वियोग की आँच से वही प्रेम अविभूत हो उठा। सूरदास की यह सृष्टि अद्वितीय है, सम्पूर्ण विश्व साहित्य में ऐसी प्रेमिका अन्यत्र नहीं है – नहीं है, और न कहीं होगी।

शब्दकोशः *भागवत परम्परा, गोपकन्या, एकनिष्ठ, अधिष्ठात्री, आहलादिनी।*

प्रस्तावना

महात्मा सूरदास भक्तिकाल के कृष्ण भक्त कवियों में श्रेष्ठ माने जाते है। सूरदास ने भागवत की परम्परा का निर्वाह करते हुए राधा का स्पष्ट नामोल्लेख किया है। सूरदास ने कृष्ण की सहचरी राधा का वर्णन किया है। सूरदास के काव्य में राधा का विशिष्ठ स्थान हे। वे स्वाभिमानिनीप्रेम की मूर्ति है। सूर की राधा न तो विलासिनी है और न ग्वालिन है। इन दिनों रूपों का एक विचित्र सामंजस्य ही मानो सूर का अभिष्ट प्रतिपाद्य है। राधा जब कृष्ण के साथ खेलती है, हँसती है, छेड़छाड़ करती है तो एक शुद्ध प्रेममयी नायिका के रूप में दिखाई देती है।

डॉ. द्विवेदी ने एक स्थल पर लिखा है – विद्यापित की राधा ईशदूदद्विन्न यौवना है, जयदेव की राधा पूर्ण विलासवती और चण्डीदास की राधा उन्मादमयी मोम की पुतली। ये तीनों ही धन्य है, पर और भी धन्य है वह बाल किशोरी, वह बतरस लालच लाल की मुरली लुकाकर धरने वाली वह आँख मिचौनी में बड़री अँखियान के कारण बदनाम बरसाने वाली छबीली वृषभानु लली। वह बालिका है, वह बाल किशोरी है, वह गोपी है, वह ब्रजनी है। शोभा उस पर स्वजान से निसार है, श्रृंगार उसका गुलाम है। त्रिलोकीनाथ उसकी आँखों के कोर के मोहताज है, फिर भी तदगत प्राणा है। विरह में वह करूणा की मूर्ति है, मिलान में लीला का अवतार। प्रेमी के सामने वह सरल है, गाती है, नाचती है, हिंडोले पर झूला झूलती है – अपने को एकदम भूल जाती है। प्रेम की गंभीरता आनन्द कल्लोल से भर जाती है, पर विरह में वह गंभीर है और गोपियों की तरह उसमें अतावलापन नहीं है। वह सच्ची प्रेमिका है सूर की राधा तीन लोक से न्यारी सृष्टि है – अपूर्व, अद्भुत, विचित्र – देखिये एक उदाहरण –

---

6 प्राचार्य, गणेश महाविद्यालय, गनेड़ी, सीकर, राजस्थान।

सुनि मोहन तेरी प्राणप्रिया को बरणौ नंदकुमार,

जो तुम आदि अंत मेरो गुन मानहु यह उपकार।

राधा एक ओर भोली, चंचल और चतुर है, प्रेम विवश परम सुंदरी गूढ़, अतृप्त प्रक्रिया है, तो दूसरी ओर गंभीर मानव शालिनी और वियोगिनी स्वकीया के रूप में दिखाई पड़ती है।

सूरदास ने राधा को एक विलक्षण प्रतिभा के रूप में प्रस्तुत किया है। वह केवल विलासिनी ही नहीं, कृष्ण के साथ केवल युवाकाल का सम्बन्ध नहीं है वरन् बहुत छोटी उम्र से वह कृष्ण के साथ गुड़ियों का खेल खेल चुकी है। वह बाल किशोरी है। उसका प्रेम बालपन की अल्हड़ता से परिपूर्ण है। वह चंचल स्वभाव वाली बालिका है। कम उम्र में ही अगाध प्रेम का आभास होता है जो खेल में हँसी में, मान में, अपमान में, रूदन में, विचित्र भाव से विकसित होता है। पहले ही दिन जब बालक कृष्ण ब्रज की गलियों में निकलते है, तो वह अल्पसखी को देखकर रीझ जाते है, परस्पर नेत्रों से प्रेम व्यापार प्रारम्भ हो जाता है – वह स्वर्गीय प्रेम है, वासना से रहित निर्मल, विशुद्ध इसका चित्ताकर्षक दृश्यविधान सूर ने उपस्थित किया है –

खेलन हरि निकसे ब्रज खोरी।

कटि काछनी पीताम्बर ओढ़े हाथ लिए भौंख चक डोरी।।

भोर मुकुट कुंडल स्रवनन वर दसन दमक दामिनी छविथोरी।

गए स्याम रवि तनया के तट अंग लसत चंदन की खोरी।।

राधा कृष्ण का प्रथम मिलन बड़ा ही मार्मिक है। इन चेष्टाओं में कितनी मोहकता है। स्याम ने अपूर्व सुंदरी स्याम को देखा। कैसा सुंदर था वह रूप, गोरा शरीर, नीला वस्त्र, पीठ पर वेणी। श्याम की आँखें श्यामा से उलझ जाती है। यह उलझन युवावस्था की नहीं, बल्कि बचपन की स्वर्गीय उलझन थी, जिसमें न झिझक है न संकोच।

सूरदास ने कृष्ण के सौंदर्य–दर्शन की लालसा राधा को सौंपी है। लगता है कृष्ण की छवि आँखों में समा लेने के लिए सूर की राधा सशरीर नेत्र बनकर भी तृप्ति नहीं पाती। कृष्ण का प्रेम उनके मन में और अधिक गहरा होता जाता है। उसमें गूढ़ता की कोई सीमा नहीं। परम उल्लासमयी राधा विरह में विषाद की मूर्ति बनकर इतनी गंभीर हो जाती है कि आश्चर्य होता है – क्या यह वही राधा है जो संयोग काल में चपल और चंचल थी। राधा एक आदर्श प्रेमिका है, कृष्ण की अर्धांगिनी हे। ब्रहम की आहलादिनी शक्ति है। राधा का यह रूप कितना सरल है कि सूरदास ने इसके अतिरिक्त उसके किसी भी रूप को अपने काव्य में विशेष महत्व नहीं दिया। राधा के इसी रूप के कारण ही उन्होनें एक देवी के रूप में उनकी आराधना की।

सूर की राधा परम् सुंदरी तथा भोली है। वे कृष्ण के साथ राधा का परिचय बड़े नाटकीय ढंग से कराते है। प्रथम परिचय में ही कृष्ण राधा से पूछ बैठते है –

बूझत स्याम कौन तू गौरी,

कहाँ रहत, काकी तू बेटी, देखी नहीं कहुँ ब्रज खोरी।

इस प्रकार राधा–कृष्ण का यह सहज प्रेम गाढ़ से गाढ़तर होता जाता है। आँखों को विश्राम नहीं, नैन पर सैन चलते है। तिल मात्र का वियोग भी असह हो उठता है। स्याम के बिना उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। वे सदैव मिलन के लिए आतुर रहते है। सूरदास की राधा के सहज एवं सरल रूप का वर्णन करते हुये हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते है –

''वास्तव में सूर की राधा शुरू से आखिर तक सरल बालिका है। उसके प्रेम में चंडीदास की राधा की तरह पग–पग पर सास, ननद का डर भी नहीं है और विद्यापति की किशोरी की भाँति हास में रूदन और रूदन में हास की चातुरी भी नहीं है। वह तो शुद्ध सरल नायिका है।''

डॉ. प्रवर ने राधा को कृष्ण को पूरक शक्ति के रूप में ही देखा है। उनके अनुसार कृष्ण का गौरव राधा के आश्रय से है। जैसे मिट्टी के बिना कुम्हार काम नहीं कर सकता, उसी प्रकार कृष्ण भी राधा के बिना कुछ नहीं कर सकते। राधा का प्रेम अलौकिक होते हुए भी लौकिक धरातल पर आश्रित है, उनकी राधा जयदेव तथा विद्यापति की भाँति शरीरी और मांसल नहीं है। सूर की राधा का रूप भागवत धर्म–सम्मत है। राधा की भक्ति में तन्मयता है। सखी गोपियों से राधा के द्वारा अपनी कृष्ण शक्ति को छिपाने का भाव है। अतः राधा गोपियों को परम पद के अयोग्य जानकर अपने और कृष्ण के प्रेम को उनसे छिपाती है। सूर की राधा में किसी प्रकार की कामुकता या विलासिता नहीं है उनका कृष्ण के प्रति प्रेम अत्यन्त विशुद्ध है, आत्मसमर्पण का है। वे सभी कार्य कृष्ण के हितार्थ ही करती है। अपने प्रियतम के प्रति विनय का भाव ही उन्हें सबसे अलग करता है। राधा पूर्ण आत्मसमर्पण के साथ कृष्ण से प्रेम करती है।

राधा का व्यक्तित्व बिखरा हुआ है, उसमें परिवेश और परिस्थितियों के प्रभाव के अनुकूल भाव–दशाओं के विविध रूप दिखाई देते है – कहीं अतिशय भोली, कहीं अतिशय चंचल, कहीं अतृप्त, कहीं गूढ़ और मूक। अंत में उनका विरह भाव जब परिपक्व होता है, तब उनका सर्वथा संश्लिष्ट व्यक्तित्व प्रकट होता है। वियोग में वह और भी अधिक विनम्र हो जाती है। वह मानसिक वेदना को सहती है, न तो उसके विरूद्ध आचरण करती है और न ही उसका प्रतिकार करती है और न ही कृष्ण से मिलने के लिए उद्यत होती है। वह हर प्रकार से लौकिक मर्यादा का पालन करती है, सूर की राधा में कहीं भी अमर्यादित तत्व नहीं है।

सूरसागर में राधा के प्रेम की तन्मयता को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। सूर राधा–कृष्ण का प्रथम मिलन किशोरावस्था में ही ब्रज की गलियों में करते है, दोनों में प्रेम उत्पन्न होता है, पनघट पर ठिठोली होती है। इस प्रकार उनका प्रेम प्रगाढ़ होता जाता है। इतना ही नहीं वियोगवस्था में तो यह प्रेम चरमावस्था पर पहुँच जाता है। उन्हें कृष्ण के बिना सारा संसार शून्य दिखाई देता है, वे संज्ञाशून्य हो जाती है। वे ब्रज के कण–कण के वियोग में तड़फने का आग्रह करती है –

मधुवन तुम कत रहत हरे।

विरह वियोग श्याम सुंदर के ठाढ़े क्यों न जरे।।

कहते है वियोग में आत्मा का विस्तार होता है। प्रेम पराकाष्ठा पर पहुँचता है, संयोगकालीन प्रतिद्वंदिता, ईर्ष्या, व्यक्गित अनुभूतियाँ सामान्य हो जाती है। वियोगी हृदय अपनी गहन वेदना को सबे साथ बाँटना चाहता है। गोपियों के विरह में ही राधा के दुःख की अभिव्यक्ति हुई है। गोपियों की भाँति राधा अपनी वेदना प्रकट नहीं करती। अतः गोपियाँ ही राधा की वेदना का वर्णन उद्धव से करती हैं –

अति मलिन वृषभान कुमारी।

हरि श्रम–जल भिज्यो उस अंचल, तेहि लालच धुआवत ना सारी।

विरह की अवस्था में राधा का मन स्थिर नहीं रहता, उनकी मनश्चेतना भ्रमित होकर नंद नंदन को ढूंढती है। वह अपनी सखियों से अनुनय करती है कि उन्हें कृष्ण से मिला दे। वह उन्मादिनी आत्मग्लानि से द्रवित होकर सखियों के पैर पकड़ लेती है और कृष्ण–कृष्ण पुकारती है। वह शोक विहवल होकर अवनि पर गिर पड़ती है और कृष्ण से अपनी शरण में लेने की याचना करती है। वह कृष्ण वियोग में मणिहीन सर्प की भाँति हो जाती है। जब उसे अपनी भूल का ज्ञान होता है कि राधा जीव है और गोपियाँ देह, तब कृष्ण आकर उनसे मिलते है।

सूरदास की राधा का हृदय–सौंदर्य देखना हो तो उद्धव का प्रसंग देखिये गोपियों ने क्या–क्या नहीं कहा। कृष्ण को भी कहा, उद्धव को भी कहा। बेचारे भौंरे की तो दुर्गति ही कर डाली, पर राधा ने तो कुछ भी नहीं कहा। उद्धव के रथ को देखकर गोपियों ने समझा कि कृष्ण आ गये तो एक दौड़ी–दौड़ी राधा के पास गई। राधा सुनकर चुप रही वह नहीं गई, क्योंकि उसे पता था कि कृष्ण नहीं आएंगें।

राधा–कृष्ण का मिलन आत्मा से आत्मा का मिलन है। कुरूक्षेत्र में कृष्ण के आने का समाचार सुनकर राधा आशावती हो जाती है वह कुछ प्रसन्नता का अनुभव करती है, नेत्रों में जल भर आता है, वह अधीर होकर अपनी सखी से पूछती है कि श्याम सुंदर कब मिलेंगें, मैं क्या करूँ।

सूर की राधा एक ऐसी नारी है, जिसमें शील, मर्यादा और संयम का अद्‌भुत समन्वय है। यही कारण है कि आज हम जब भी पवित्र प्रेम का उदाहरण देते है जो राधा–कृष्ण का ही नाम याद आता है। राधा कृष्ण का प्रेम भारत ही नहीं समस्त संसार में जन–जन के हृदय में बसा हुआ है। हमारे भारतीय जन–मानस में तो राधा–कृष्ण का प्रेम ऐसे बस चुका है कि वह हमारे जीवन का अंग बन चुका है। आज अगर हम राधा–कृष्ण के प्रेम का रसास्वादन कर पा रहे है, वह महात्मा सूरदास की देन है।

संदर्भ ग्रथं सूची

1. सूर सागर : सूरदास, प्रथम खण्ड – पद संख्या 1920
2. सूर सागर : सूरदास, प्रथम खण्ड – पद संख्या 4722
3. सूर सागर : सूरदास, प्रथम खण्ड – पद संख्या 1291
4. सूर साहित्य का मनोवैज्ञानिक विवेचन : डॉ. शैलबाला अग्निहोत्री, पृष्ठ संख्या 226
5. हिन्दी कवि चर्चा : डॉ. चंद्रवली पाण्डेय, पृष्ठ संख्या 220
6. सूरदास की राधा : डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ संख्या 321
7. हिन्दी साहित्य के प्रतिनिधि कवि : डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना
8. कृष्ण भक्तिकाल और सूर की राधा : डॉ. दयाशंकर मिश्र

❖◆❖